विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। –अब्राहम लिंकन

भविष्य की नींव हम कैसी निर्माण कर रहे है?

कृषि व प्रोफेशनल शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश सरकारें अभी तक देश के आधे युवाओं को वंचित करती रही हैं विभिन्न कारणों और बिना कारणों के :

कृषि व प्रोफेशनल शिक्षा के क्षेत्र मेंप्रदेश सरकारें अभी तक देश केआधे युवाओं को वंचित करती रही हैं विभिन्न कारणों और बिना कारणों के : स्वतंत्रता पश्चात देश की सरकार मंचों से जनता को अभी तक भ्रमित और गुमराह ही करती रही है। सभी प्रकार की शिक्षाओं के अनुपयुक्त संसाधन और उनके लचर पचर सञ्चालन ने देश में कतिपय शिक्षाओं को छोड़कर लगभग सभी प्रोफेशनल जिसमे कृषि शिक्षा भी शामिल है ,सरकार के लगातार वर्ष दर वर्ष उदासीन रवैये ने शिक्षण संस्थाओं के भवनों को तो बख्श दिया है परन्तु उनमें होने वाली सभी शिक्षण गतिविधिओं का ऐसा सत्य नाश मारा है जो मेरे आंकलन से अगले तीन दशकों तक भी सुचारु और वांछित राह पर आने वाली नहीं।

इस लेख में पाठकों ,छात्रों ,अभिवावकों एवं उन बुद्धि जीविओं और सरकार में गुना भाग करने वाले सचिवो का ही ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करूँगा जो शिक्षा के सञ्चालन को सर्वोत्तम श्रेय देते हैं। सरकारी विफलताओं से उपजी त्रुटि शिक्षण में व्याप्त होकर छात्रों का अहित और अंत: देश का अहित करती है ,उनपर अपने कुछ प्रश्न उठाकर प्रभावित् वर्ग से ही उनका उत्तर देने काअनु रोध करता हूँ,कियोंकि देश जाय भाड़ में ,छात्रों का समय और उन के अभिवावकों का असीम धन का जब अबव्यय होता है उसकी भरपाई कभी संभव नहीं होपाती। भविष्य में धन भले ही उपलब्ध कर लिया जाय बीता समय और छात्र की बीती आयु की भरपाई सरकार अथवा अन्य किसी के माध्यम से तीन पीडियां भी क्षितपूर्ति नहीं कर सकेंगी।

जनप्रतिनिधि एक निश्चियत समय के बाद राजनीत से चले ही जाते हैं। सरकारी अफसर भी रिटायर होकर अपने घर बैठे पेंशन लें रहे होते हैं लेकिन पढ़ने वाले का समय जो बिना पढ़े बीत गया वो क्या लौट सकेगा ? पढ़ने वाला भी पढ़ने की आयु सीमा पार कर जायेगा और अन्य किसी काम का फिर नहीं रहेगा सिवाय मजदूरी करने के। क्या प्रधान मंत्री ,शिक्षा मंत्री व् अन्य कोई इस प्रश्न का जवाव देश को दे सकता है ?

दूसरा प्रश्न देश के युवा को अन्य देशों में पढ़ाई के लिए क्यों जाना पढता है ?कारण स्पष्ट है देश की सरकारों ने छात्रों की अपार सख्या और बढ़ते तकनीकी व् प्रोफेशनल ज्ञान के पाने के लिए देश का युवा लालायत है लेकिन सरकार के बोये अनेक उपजे अवरोधों से न तो उसे वांछित संस्था में प्रवेश मिलता है और न वाछित विषय। कोई राह न मिलते देख वह और उसके अविभावक अपने संपत्ति बेचकर अपने लाड़ले को किसी अन्य देश में बिना सरकारी निर्देशएवं मदद के बिचौलिओं की मार्फ़त भेज देते हैं।

सरकार के लगातार वर्ष दर वर्ष उदासीन रवैये ने शिक्षण संस्थाओं के भवनों को तो बख्श दिया है परन्तु उनमें होने वाली सभी शिक्षण गतिविधिओं का ऐसा सत्य नाश मारा है जो मेरे आंकलन से अगले तीन दशकों तक भी सुचारु और वांछित राह पर आने वाली नहीं।

यूक्रैन रूस युद्ध के समय यह देश पहली बार जान पाया कि हज़ारों की संख्या में देश के छात्र अन्य देशों में पढ़ रहे हैं। उन्हें निकालने के लिए देश के तीन चार मंत्रिओं को प्रधान मंत्री ने भेजा तब वे छात्र स्वदेश लौट सके। आश्चर्य होता है ,यह सवाल किसी ने नहीं पूंछा और न किसी अखवार में छपा अथवा सदन में किसी सदस्य ने उठाया। प्रधान मत्री ने अपने चार पांच मंत्रिओं को यूक्रैन ,पोलैंड ,रूस आदि देशों में उन छा त्रों को निकालने और वापिस देश लाने तो भेजा। लौट कर वे सब मंत्री ,प्रधान मंत्री और छात्र चुप बैठ गए वहां जो कुछ पढ़ा सब बेकार। किसी ने भी यह नहीं सोचा कि इन छात्रों के लिये वांछित शिक्षा देश में ही क्यों उपलब्ध नहीं हो सकती ? सात दसक बीत गए अनेक पांच वर्षीय योजनाएँ पूरी होचुकी ,फिर भी देश का युवा न तो शिक्षित हो सका और न ही संपन्न। योजनाओं का सही क्रियान्वन नहीं हुआ ,सत्ता में वैठे राजनेता और उनके बिचोलिये देश का जो धन विकास में खर्च होंना चाहिये था उसको डकारते रहे और महल बनाकर उनके कमरे करेंसी नोटों की गड्डिओं से भरते रहे। प्रधान मंत्री मोदी जी वैसे तो ईमानदार हैं परन्तु भ्रष्ट लोगों पर आज तक न तो नकेल कसी जा सकीऔर न ही कोई अन्य वांछित कार्यवाही की गयी। भाषण में किसी बात को यदा कदा मंच से पब्लिक में कह देना और वास्तव में उस पर कार्यवाही करने में अंतर होता है। मेरा सुझाव है कि सभी विकास अभी रोककर पूँजी (सभी प्रकार की शिक्षा) विकास पर प्राथमिकता हो। अपराधी कोर्ट से जमानत और जेल से पेरोल पर स्वतंत्र बने रहते हैं। क्याऐसी व्यवस्था को बाबा साहब ने पुस्तक में लिख दिया था? विपक्ष के मुखर कांठोस नेता जो बाबा साहव की किताब की प्रति लेकर जनता को दिखाते फिरते हैं ने भी पीड़ित छात्रों के इस दु:ख को कभी कहीं आवाज नहीं दी। विदेश से लोटे छात्रों के इस दु:ख को किसी मीडिया ने नहीं उठाया। आश्चर्य होता है कि विपक्ष मौन क्यों हुआ इस बात पर ?क्या वे इस देश के नागरिक नहीं थे क्या वे वोटर भी नहीं थे ? . दु:ख की बात है कि सरकार अप्राधिओं के सब अपराध सेहती रहती है जो तुरंत वांछित पुलिस कार्यवाही के लिए उपयुक्त होते हैं। यहाँ तक देश द्रोह भी अब बर्दास्त किया जाता है। अब तीसरा प्रश्न सरकार से कि जिन गरीवों और पिछड़े वर्ग को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना था वे सत्तर वर्षों तक उन्नत क्यों नहीं बन सके ?निश्चित रूप से सरकार की योजनाएं या तो सही नहीं थी अथवा उनकी क्रियान्वति में कोई कमी रह गई। समय है सरकार एक आयोग गठित कर आंकलन करवाए कि कितने पिछड़े और गरीव संपन्न हो गए उनकेबेटे बेटियां क्या उच्च शिक्षा ठाहण कर सके ?सरकार की कलई खोलने के लिए वस्तु स्तिथि जानना और लोगों तो शीशा दिखाना और देखना अति आवशयक है।

दूसरी बात भी जो जानना है कि गरीबों की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ने से उनकी प्रतिभा में इजाफा हुआ या नहीं ? उनके अंदर अन्य कोई विकार तो घर नहीं कर गया ?

इस लेख से मेरा मकसद है कि देश केसभी युवाओं को वांछित शिक्षा और उद्यम के समान अवसर उपलब्ध हों। शिक्षण संस्थानों में किसी भी छात्र को प्रवेश से वंचित न किया जाय भले ही सीटें व् अन्य संसाधन बढ़ाने पड़े। अभी ईरान से भारत के छात्रों को लेकर तीन हवाई ट्रिप दिल्ली आ चुकी हैं. लेकिन सरकार फिर भी शर्मिंदा नहीं ? कि भारत यूक्रैन, ईरान ,पोलैंड सरीखे देशों से भी शिक्षा में पिछड़ा है। फिर हम किस आधार पर विकसित और चौथी विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था की डींग मारते हैं ?. प्रतीत होता है हमारी सोच और विवेक किसी ने गिरवी रख लिया है ? यदि ऐसा है तो फिर सरकार भेड़ों के रेवड़ों को चरा रही है। इससे अधिक कुछ नहीं।

देश के प्रधान मंत्री वर्तमान आरक्षण को कभी समाप्त नहीं करने के घोषणा पहले ही कर चुके हैं लेकिन शेष युवा और वे जो येन केन विदेश जाकर शिक्षा लेना चाहते हैं ,के लिएप्रधान मंत्री और उनकी सरकार के पास कोईयोजना है ?हो तो उजागर करें। शेष आधी युवा पीढ़ी वर्ष दर वर्ष अपनी प्रतिभा कुंठित कर अपराध जगत की राह पकड़ने में संकोच नही करेगी ? मध्यप्रदेश के बीहड़ों में पनपे डाकुओं का भी इतहास भी ऐसा ही है परतु अब कोई विनोबाभावे सरीखे व्यक्ति मिलने वाले नही। मार्गदर्शक जयप्रकाश बाबू जैसे भी अब नही मिलते।

वांछित पढ़ाने वाले की जगह ठेके परअनुभवहीन इस कार्य के लिए उच्च शिक्षा में नियुक्त कर लिए जाते हैं। खाली पदों को सचिव लोग भरने नहीं देते और किसी प्रकार साक्षात्कार तक प्रक्रिया पहुँच भी जाय तो अपने ही किसी सेकोर्ट से स्टे करवा देते हैं इससे जो अनुभवहीन पढ़ा रहे हैं वे जॉब में चलते रहते हैं। यह खेल है जो उच्च शिक्षण संस्थानों में कभी देखने को मिल जाता है। उच्च शिक्षा के इस खेल को आम आदमी समझ नहीं सकता।

मुख्य प्रश्न है कि रिक्त पद तुरंत क्यों नहीं भरे जाते ? इसलिए कि इसमें सबकी मिली भगत है और फायदा भी सब का छात्रों के अतिरिक्त।

अंत में मैं अनुसंशा करता हूँ कि किसी भी युवा छात्र यदि वह वांछित योग्यता रखता है उसे किसी भी उपयुक्त विषय और महाविद्यालय में प्रवेश बिना किसी सीमा निर्धारण के दिया जाय ,यह उसका अधिकार है और उसे मिलना ही चाहिए भले ही आगे परीक्षा में वह असफल हो जाय। प्रवेश परीक्षाओं पर प्रतिबन्ध लगा कर उनेह अमान्य घोषित किया जाय। अन्य देशों में देश का कोई युवा पढ़ने के लिए जाने कोविवश न हो।देश की आज़ादी पर यह कलंक है।

इस संधर्व में देहली स्तिथ भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद जो देश में कृषि अनुसन्धान और उच्च शिक्षा को विभिन्न प्रकार से सपोर्ट और मार्गदर्शन करती है के कलापों पर भी दृष्टि डालना जरुरी है। यह परिषद् मूलत: कृषि अनुसन्धान के लिये बनी थी कालान्तर में इसने शिक्षा और प्रसार कार्यक्रमों को भी अपने परिधि में समेट लिया। फलस्वरूप विश्वविद्यालय उदासीन हो गए और उनकी अकादमिक कौंसिल पोस्ट ठोजुएट कौंसिल ,कोर्स समिति आदि सभी एक्ट प्रदत्त प्रावधान निष्क्रिय हो गए।

परिषद् ने कृषि संकाय के सभी विषयों पर विस्तृत विवरण तैयार कर नेट पर अपलोड करवा दिया।सुविधा तो अच्छी थी लेकिन प्रदेश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों से सम्बंधित प्रबंधकों ने अनुचित लाभ उठाया। यह सुविधा परिषद् ने केवल गाइडेंस के लिए दी थी परन्तु इसका प्रभाव यह पढ़ा कि छात्रों ने लाइब्रेरी को तिलांजलि दे दी ,टीचर्स ने भी उसे आधार मानकर सम्बंधित विषय वस्तु कक्षा में छात्रों को परोसना शुरू कर दिया यह देख छात्रों ने कक्षाओं में केवल हाज़िरी के लिए जाना ही जरुरी समझा कियोंकि विषय के विस्तृत नोट्स अब उनेह नेट पर पढ़ने को मिल रहे हैं। अंततोगत्वा पढ़ाने वाले टीचर्स की कमी भी अब कोई मायने नहीं रखती।

लोकलाज बचाने के लिए महाविद्यालय ठेके पर विचरण करते बेरोजगारों को निमंत्रित कर उनेह मज़दूरी पर कक्षा की पढ़ाई की औपचारिकता सौंप देते हैं। इस प्रणाली से सरकार का अपार धन वर्षों से बच रहा है। प्रैक्टिकल के नाम पर नाम के लिए कोई एक दो परिक्षण लैब असिस्टेंट अथवा टेक्निकल सहायक करवा देता है।महाविद्यालयों और अधिस्नातक टीचर्स जो विषय पढ़ा ते हैं वे किसी भी मान्य समिति से प्रमाणमित नहीं होते।

यह प्रदेश सरकारों की कितनी उत्तम रिति है।पाठकों को बता दें कि कॉलेजो में दैनिक मज़दूरी पर जो टीचर्स पढ़ाते हैं वे किसी भी समिति से प्रमाणित नहीं होते। मैं एक प्रोफेशनल और लेखक की हैसियत से दावे से कहता हूँ कि स्नातक डेरी के छात्र बारहवीं कृषि में कराये प्रैक्टिकल भी ठीक से नहीं कर सकते। ऐसी कृषि शिक्षा भविष्य में देश का क्या उत्थान करेगी और कृषि उन्नयन में कैसे भागीदार बनेगी ?यह अभी सोचने का विषय है कियोंकि लगभग 20 वर्ष का काल बीत गया इस स्तिथि में। समझ नहीं आता भविष्य की नीव हम कैसी निर्माण कर रहे हैं ?

अतिथी संपादक
प्रो. वीर बहादुर सिंह ,
पूर्व कुलपति व् अधिष्ठाता ,
महाराणा प्रताप कृषि
एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

क्या शिक्षकों के चेहरे बदल गए हैं ?

शिक्षकों की स्थिति और चुनौतियां, शिक्षक अक्सर कई चुनौतियों का सामना करते हैं

अशोक कुमार

वर्तमान में शिक्षकों की भूमिका और उनका प्रशासन के प्रति रवैया एक जटिल विषय है, जिस पर अलग-अलग राय हो सकती है। यह कहना कि "शिक्षकों के चेहरे बदल गए हैं" और वे "केवल प्रशासन के गुणगान गाते रहते हैं" एक सामान्यीकरण हो सकता है, क्योंकि शिक्षकों के विचार और व्यवहार विभिन्न कारकों पर निर्भर करते हैं।

शिक्षकों की स्थिति और चुनौतियाँ

शिक्षक अक्सर कई चुनौतियों का सामना करते हैं, जिनमें शामिल हैं:

सेवा शर्तें और वेतन: कई शिक्षकों को लगता है कि उन्हें पर्याप्त वेतन नहीं मिलता और उनकी सेवा शर्तें भी संतोषजनक नहीं हैं, जिससे उनके मनोबल पर असर पड़ता है।

प्रशासनिक दबाव: स्कूलों और शिक्षा विभागों से आने वाले प्रशासनिक दबाव के कारण शिक्षकों को अक्सर पाठ्यक्रम पूरा करने और अन्य गैर-शैक्षिणक कार्यों में लगाया जाता है।

राजनीतिक हस्तक्षेप: शिक्षा क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप एक बड़ी चुनौती है, जिससे शिक्षकों की स्वायत्तता प्रभावित होती है।

कार्यभार: शिक्षकों पर शैक्षिणक और गैर-शैक्षिणक कार्यों का बोझ अक्सर अधिक होता है, जिससे उन्हें अपनी राय व्यक्त करने का समय नहीं मिलता।

विरोध या पक्ष न रखने के कारण

शिक्षक अगर किसी नीति की बुराई या विरोध नहीं करते या अपना पक्ष नहीं रखते, तो इसके कई कारण हो सकते हैं:

डर और असुरक्षा: शिक्षकों को अक्सर यह डर होता है कि अगर वे प्रशासन के खिलाफ बोलेंगे तो उन्हें प्रतिशोध का सामना करना पड़ सकता है, जैसे स्थानांतरण, पदोन्नित में बाधा या अन्य दंड।

पदानुक्रमित ढाँचा: भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक स्पष्ट पदानुक्रम है, जहाँ शिक्षकों को अक्सर उच्च अधिकारियों के निर्देशों का पालन करना होता है।

संघों की भूमिका: शिक्षक संघों की भूमिका कमजोर होने से भी शिक्षकों को अपनी बात रखने में मुश्किलें आती हैं। कुछ संघ शायद अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करने में उतने प्रभावी न हों।

नीतियों का अनुपालन: कई बार शिक्षक सिर्फ नीतियों का अनुपालन करते हैं, भले ही वे उनसे सहमत न हों, ताकि वे विवादों से बच सकें और अपनी नौकरी सुरक्षित रख सकें।

क्या सभी शिक्षक ऐसे हैं?

यह कहना गलत होगा कि सभी शिक्षक केवल प्रशासन के गुणगान गाते हैं। आज भी कई शिक्षक ऐसे हैं जो शिक्षा के स्तर को सुधारने और छात्रों के हित में काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे अपनी बात रखने के लिए विभिन्न मंचों का उपयोग करते हैं, जैसे: शिक्षक संघों के माध्यम से: कुछ शिक्षक संघ आज भी सक्रिय हैं और शिक्षकों के अधिकारों और नीतियों में सुधार के लिए आवाज उठाते हैं।

अकादमिक मंचों पर: शिक्षक अक्सर सेमिनारों, सम्मेलनों और अकादमिक मंचों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं।

सोशल मीडिया: कुछ शिक्षक सोशल मीडिया के माध्यम से भी शिक्षा नीतियों पर अपनी राय रखते हैं, हालांकि इसमें जोखिम हो सकता है।

यह सच है कि कुछ कारक उन्हें अपनी राय खुलकर व्यक्त करने से रोकते हैं। एक स्वस्थ शिक्षा प्रणाली के लिए शिक्षकों को अपनी बात रखने और रचनात्मक आलोचना करने का अधिकार मिलना चाहिए।

अशोक कुमार
पूर्व कुलपति कानपुर ,
गोरखपुर विश्वविद्यालय ,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर

अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविरों में जनसमस्याओं का समाधान

■ भींचावा, काशीनगर ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित

मकराना, (निस) उपखंड की जाखली, भींचावा और काशीनगर ठाम पंचायतों में शुक्रवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविरों का आयोजन किया गया। राज्य सरकार के निर्देशानुसार 24 जून से 9 जुलाई तक चलने वाले इस पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न विभागों की योजनाओं व सेवाओं का लाभ आमजन को एक ही स्थान पर उपलब्ध करवाया जा रहा है।

जाखली शिविर का निरीक्षण करने के लिए डीडवाना-कुचामन के जिला कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत ने औचक निरीक्षण किया, उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को आमजन की समस्याओं का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। शिविरों में राजस्व विभाग द्वारा लंबित नोटिसों की तामील, पत्थरगढ़ी, सीमाज्ञान और नामांतरण से जुड़े प्रकरणों का निस्तारण किया गया। वन विभाग ने हरियालो राजस्थान अभियान के तहत पौधों का वितरण किया तथा पौधारोपण करवाया। खाद्य विभाग ने एनएफएसए के तहत लंबित प्रकरणों का समाधान किया, वहीं आधार सीडिंग, ई-केवाईसी और नवीन पात्र परिवारों को योजना से जोड़ा गया। शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालय परिसरों की सफाई, अनुपयोगी व जर्जर सामठी के निष्पादन, प्रवेशोत्सव का आयोजन, स्कूलों का क्रमोन्नयन, नए संकायों की शुरुआत तथा स्कूटी वितरण जैसी गतिविधियां संचालित की गईं। ऊर्जा विभाग ने झूलते बिजली के तारों को व्यवस्थित किया और तारों के संपर्क में आने वाले पेड़ों की छंटाई की। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग व जल संसाधन विभाग ने लंबित जल कनेक्शन जारी किए, टंकियों की सफाई करवाई।

सीएम ने गणेशाराम को इलेक्ट्रिक ट्राई साइकिल सौंपी

जोधपुर । किसी भी सरकार के सुशासन और नैतिकता का सबसे बड़ा पैमाना यह है कि वह सबसे पिछड़े व्यक्ति को मुख्यधारा में लाने के लिए क्या कर रही है। राजस्थान सरकार ने लगभग पिछले डेढ़ वर्ष में इस दिशा में अनेक प्रतिमान गढ़े हैं और इसकी ताजा कड़ी है पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा। इस पखवाड़े के तहत जोधपुर जिले की ग्राम पंचायत दईजर (पंचायत समिति केरू) में गुरूवार को आयोजित जनकल्याण शिविर में एक अनमोल क्षण तब देखने को मिला जब देसुरिया करवड निवासी गणेशाराम को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कर-कमलों से इलेक्ट्रिक ट्राई साइकिल प्राप्त हुई। गणेशाराम सुचेता कृपलानी महाविद्यालय में बी.ए. तृतीय वर्ष का विद्यार्थी है, दोनों पैरों से दिव्यांग है। कॉलेज उसके गांव से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में जन्मे गणेशाराम के पिता वृद्ध हैं और परिवार की आजीविका का कोई स्थायी स्त्रोत नहीं है। कॉलेज जाने के लिए उसे अब तक कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रदान की गई इलेक्ट्रिक ट्राई साइकिल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की संयुक्त सहायता योजना के अंतर्गत दी गई है जिससे गणेशाराम के जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है। साइकिल प्राप्त करते हुए गणेशाराम की आँखों में जो चमक थी, उसने बता दिया कि यह सहायता उसके लिए केवल एक वाहन नहीं, बल्कि स्वावलंबन की सवारी है । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस अवसर पर कहा, सरकार का उद्देश्य है कि कोई भी व्यक्ति अपनी अक्षमता या संसाधनों की कमी के कारण पीछे न रह जाए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय के सिद्धांत पर चलते हुए हम अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गणेशाराम ने बताया, अब मुझे कॉलेज जाने में परेशानी नहीं होगी। मैं समय पर पहुंच सकूंगा, खुद अपने काम भी कर सकूंगा। मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मुझ जैसे गरीब और दिव्यांग छात्र के सपनों को उड़ान दी है। दईजर शिविर में इस तरह के कई संवेदनशील और जनकल्याणकारी क्षण देखने को मिले। गणेशाराम की मुस्कान ने यह सिद्ध कर दिया कि सरकार की योजनाएं जब सही हाथों तक पहुंचती हैं, तो वे सिर्फ लाभ नहीं, भविष्य गढ़ती हैं।

डॉ. मुखर्जी को राष्ट्रवाद की प्रतिबद्धता ने कांग्रेस पार्टी से अलग किया : मदन राठौड़

■ इतिहास गवाह है आपातकाल लागू कर कांग्रेस पार्टी ने संविधान और जनता के अधिकारों को कुचलने का कृत्य किया :मदन राठौड़

जयपुर/डीडवाना, । भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने शुक्रवार को डीडवाना में आपातकाल की 50वीं बरसी और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन एवं देशहित में किए गए उनके संघर्षों की चर्चा करते हुए कहा कि डॉ मुखर्जी असाधारण प्रतिभा, अद्वितीय मेधा के धनी थे। महज 32 वर्ष की आयु में वे कोलकाता विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर बने। 1935 में वे विधायक बने और 1936 में बंग-भंग आंदोलन के विरोध में उन्होंने विधायकी से इस्तीफा दे दिया। उस समय बंगाल में हिंदुओं को उनके घरों से निकाल कर जबरन कब्जा किया गया, जिसका उन्होंने तीव्र विरोध किया। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें कांग्रेस पार्टी से अलग ले गई।

डीडवाना में आपातकाल की 50वीं बरसी व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि डॉ मुखर्जी ने दो विधान, दो प्रधान और दो निशान के खिलाफ आवाज उठाई और नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया। डॉ. मुखर्जी ने सत्य और राष्ट्रिहत के लिए मंत्री पद त्याग किया। उन्होंने बताया कि मुखर्जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी के साथ मिलकर जनसंघ की स्थापना की थी। पहले ही चुनाव में पार्टी ने 3 सांसद और 23 विधायक जीतकर राजनीतिक विकल्प के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एक देश, एक विधान की भावना को लेकर वे मई 1953 को बिना परमिट कश्मीर गए, जहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 23 जून 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। राठौड़ ने आरोप लगाया कि उस समय की कांठोस सरकार ने इस संदिग्ध मृत्यु की जांच तक नहीं करवाई। उन्होंने कहा कि देश का विभाजन केवल ब्रिटिश नीति का परिणाम नहीं था, बल्कि तत्कालीन कांठोस नेतृत्व, विशेष रूप से जवाहरलाल नेहरू की प्रधानमंत्री बनने की लालसा का भी नतीजा था।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने आपातकाल को लोकतंत्र और संविधान की हत्या का दिन बताया। उन्होंने कहा कि 25 जून 1975 को लागू की गई इमरजेंसी कांठोस द्वारा सत्ता की लालसा में की गई तानाशाही का प्रतीक थी। उन्होंने कहा कि उस दौरान लाखों लोगों को रातों-रात गिरफ्तार किया गया, प्रेस पर सेंसरशिप थोप दी गई, न्यायपालिका को कमजोर किया गया और लोगों की संपत्तियों तक पर मनमर्जी से कब्जा किया गया। राठौड़ ने 6 अगस्त 1975 को लाए गए उस कानून का उल्लेख किया, जिसके तहत आपातकाल के खिलाफ कोई अपील तक नहीं की जा सकती थी। उन्होंने कहा कि आज कांठोस 'संविधान बचाओ यात्रा' निकाल रही है, जबकि इतिहास गवाह है कि इसी पार्टी ने संविधान और जनता के अधिकारों की सबसे बड़ी हत्या की थी। कार्यक्रम में राठौड़ ने कार्यकर्ताओं से आ ान किया कि वे डॉ. मुखर्जी के बलिदान और आपातकाल के अत्याचारों को जन-जन तक पहुंचाएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां सच्चे इतिहास से परिचित रह सकें। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नाहर सिंह जोधा, भाजपा प्रदेश कोषाध्यक्ष पंकज गुप्ता, भाजपा प्रदेश मंत्री भूपेंद्र सैनी, मान सिंह जी किंसरिया, अशोक सैनी सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, भाजपा जिलाध्यक्ष, जिला पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहें। इससे पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ का नावां, मकराना, डीडवाना सहित कई स्थानों पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत-संत्कार किया।

राशिफल शनिवार 28 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास शुक्ल पक्ष,तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम सम्वत 2082, पुष्प नक्षत्र प्रात: 6.36 तक, हर्षण योग सायं 7.15 तक, गरकरण करण दिन 9.54 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा। आज रवियोग प्रात 6।36 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 9.34 से आरम्भ होगी। आज विनायक चतुरथी है।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरु-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा।

आज सवार्थ सिद्धि योग प्रात: 7.22 तक है। राजयोग प्रात: 7.22 से सूर्योदय तक है। आज रथ यात्रा उत्सव, मेला आषाढी दशहरा श्रीजगदीश जी रथयात्रा जगन्नाथपुरी है। आज मुर्हरम मु.मास 1 हिजरी सन् 1447 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चट सूर्योदय से 7.22 तक, लाभ-अमृत 7.22 से 10.47 तक, शुभ 12.29 से 2.12 तक, चट 5.37 से सूर्यास्त तक

राहूकाल: राहुकाल 9.00 से 10.30 तक सूर्योदय 5.39 सूर्यास्त 7.20

मेष
घर-परिवार में सुख-सुविधाऐ बडेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरी पेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बडेगा।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनस्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाऐं बडेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
अर्नगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी।

कन्या
आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
वृश्चिक - नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक - आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड सकते है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक-आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों में राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज समय महत्वपूर्ण ओर रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक-आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।